केस स्टेडी : स्कूल लीडरशिप (प्रथम दिवस हेतु)

जोबनटेकरी प्राथमिक पाठशाला बड़ोदरा से 20 कि0मी0 की दूरी पर स्थित हैं, जिसमें दो छोटे कमरे, 50 विद्यार्थी तथा तीन शिक्षिकाऐं कार्यरत हैं। इस पूरी टीम में महिलाऐं, मिड–डे मील संयोजिका, कुक तथा सरपंच शामिल हैं। ये सभी दलदली एवं बड़े–बड़े गढ्डों युक्त रास्ते से होकर अपनी यात्रा करती थी।

विद्यालय में बच्चों की अनुपस्थिति दर बहुत अधिक थी। अधिकांश बच्चे बाहर खेलते थे या फिर अपने माता–पिता के साथ खेतों में काम करते थे, जो विद्यालय आते थे वह मैले कुचैले कपड़ों में आते थे ? विद्यालय परिसर में एक हैण्डपम्प था, जिससे ग्रामवासी पानी भरने आते थे। तथा आपसी वार्तालाप में गाली–गलौंच करते थे, तथा विद्यालय के बरामदे में ग्रामवासी शराब एवं मीट का सेवन करते थे तथा उनकी गंदगी सुबह तक बरामदे में पड़ी रहती थी, जिससे सफाई विद्यालय स्टाफ को करनी पड़ती थी। स्टाफ में एक भद्राबेन नाम की शिक्षिका ने बच्चों को सुधारने का प्रयास शुरू किया और बच्चों के माध्यम से समुदाय तक पहुंचने का प्रयास किया। वह बच्चों को अंक, शब्द और अच्छे व्यवहार का ज्ञान देती थी एवं लंच के समय उनके माता–पिता खेतों में वापस लौटते थे तब वह बच्चों को बाहर ले जाती थी। और उनको यह बताती थी कि बच्चों ने आज क्या सीखा है। जब माता–पिता वहां से गुजरते थे तो वहां पर रूककर अपने बच्चों की वार्तालाप सुनते थे, जिससे कि स्वयं की अभद्र भाषा एवं गाली–गलौंच करना बंद हो गया। यह व्यवहार नियमित क्रियाकलाप में बदल गया एवं हैण्डपम्प से पानी भरते समय धीरे–धीरे गप्पे लगाना एवं गाली गलौंच करना बंद हो गया। अभिभावकों ने अपने बच्चों को विद्यालय परिसर में गत रात्रि में की गई गंदगी को साफ करते देखा तो उन्होंने गंदगी करना बंद कर दिया।

एक दिन वर्षा ऋतु में यह शिक्षिका सड़क पर घुटने तक भरे पानी से होकर स्कूल आ रही थी तो गाँव वालों ने उसे खाई के पास रोका और कहा कि वह वापस लौट जाये, क्योंकि बाईक से खाई को पार करना असंभव हैं एवं आगे के रास्ते में उसे कीचड़ से भरी सड़क से जाना होगा तथा मानसून सत्र के बाद ही आने के लिए कहा। उक्त प्रतिक्रिया में उसने कहा, ''क्या तुम मानसून सत्र में अपना काम करना बंद कर देते हो ?'' तथा मुझे वापस भेजने की बजाय मुझे यह

सिखाओ की तुम इस खाई को कैसे पार करते हो ? इसकी ईमानदारी एवं शिक्षण के प्रति लगाव देखकर बहुत प्रभावित हुए। इसके बाद उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा अपने साथियों से इस घटना की खुशी–खुशी चर्चा की। अब समुदाय से उसे छोटे–छोटे कार्यों में सहयोग मिलने लगा। वह केवल अपनी आवष्यकताओं के लिए ही समुदाय के लोगों से नहीं मिलती थी बल्कि वह विद्यालय समय से एक या दो घंटे पूर्व विद्यालय आती थी। एवं गाँव में घर–घर घूमती थी। उनसे आदरपूर्वक उनके बच्चों के बारे में पूछती थी जिससे उसका ग्रामवासियों के साथ आत्मीय संबंध स्थापित हो गया।

इस विद्यालय की मुख्य विशेषता बाल केन्द्रित शिक्षा थी। कक्षा 1 से 5 के सभी बच्चों को अंक ज्ञान, पहाड़े आदि संगीत, डांस, ड्रम एवं योगिक मुद्रओं की सहायता से सिखाया जाता था। वह हिन्दी एवं अंग्रेजी महीनों के नाम बोल–बोल कर लय–ताल के साथ सीखते थे, तथा लघु कथाओं, कठपुतलियों एवं बाल विज्ञान को ध्यान में रखकर संस्कार सिखाये जाते थे। तरह–तरह के कीड़े–मकोड़े, जानवर, पक्षियों के ज्ञान भिन्न–भिन्न वस्तुओं से बनी कठपुतलियों द्वारा बाल मानोविज्ञान को ध्यान में रखकर दिया जाता था। इसी दौरान उनको संस्कृति का ज्ञान, नये शब्द, वाक्यों को सिखाया जाता था तथा गिनती का ज्ञानमोतियों के माध्यम से दिया जाता था। इस शिक्षिका के उत्साह एवं उच्च विचारों के समक्ष सम्पूर्ण समुदाय नतमस्तक हो गया।

I. वह मुख्य अध्यापिका नहीं होते हुए भी भद्राबेन ने किस प्रकार की लीडरशिप को दर्शाया।
II. भद्राबेन की कोई तीन लीडरशिप के गुणों की पहचान कीजिए।
III. समुदाय से सहयोग एवं शिक्षा अधिगम में सुधार के लिए भद्राबेन द्वारा क्या रणनीति अपनाई गयी?
IV. क्या आप मानते हैं कि स्कूल लीडरशिप के साथ–साथ टीचर लीडरशिप भी महत्वपूर्ण हैं?
V. इस केस से आप को क्या सीख मिलती हैं जिसको आप अपने विद्यालय में दौहराना चाहेंगे?